8-3

काली उपासना



सरल एवं प्रामाणिक

काली उपासना

(काली पूजन विधि सहित भाषा टीका)

रचयिता—तंत्र सम्राट् पं० श्यामानन्द शास्त्री
[काक्षा धाम]

प्रकाशक :

श्रीलोकनाथ पुस्तकालय
१७३ महात्मा गाधी रोड कल-७.

एकादश सं०-४०००

मूल्य ५=००



ध्यायेद् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम् ।
चतुर्भुजां ललजिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥
नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसंघ विदारिणीम् ।
नरमुंड तथा खंगं कमलं च वरं तथा ॥
बिभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्राली घोररूपिणीम् ।
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बरीम् ॥
शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम् ।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु पूजनमारभेत् ॥

दो शब्द

काली दश महाविद्याओं में सर्वप्रधान हैं। काली के उपासकों को अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष सहज ही सुलभ हो जाते हैं। परन्तु यह उपासना सिद्ध गुरू के द्वारा उचित शिक्षा लेकर ही करनी चाहिये।

दुर्गा सप्तशती में महाकाली का वर्णन आता है कि वह भगवती दुर्गा के ललाट से उत्पन्न हुई है और यह दुर्गा की त्रिमूर्तियों में से एक हैं। हमारे तन्त्र शास्त्रों में काली के अनेक रूपों का वर्णन हैं जिसमें आठ भेद माने जाते है। इन आठों में दक्षिणा काली की उपासना ही गृहस्थों के लिए उचित बताई गई है क्योंकि यह शास्त्र सम्मत, सरल और हानि रहित है।

काली उपासना के ३ भाव कहे गये हैं (१) पशु भाव (२) वीर भाव (३) दिव्य भाव।

मनुष्य संसार के सब प्राणियों में सर्वोत्तम पशु है। अतः सामान्य मनुष्य इसी भाव से देवी का पूजन करते हैं। वीर भाव तथा दिव्य भाव उन्नत साधना के अंग है जो किसी योग्य गुरू द्वारा निर्देशित मार्ग के आधार पर किये जा सकते हैं, अन्यथा इन भावों के द्वारा साधना करने पर मनुष्य को लाभ की जगह हानि भी पहुंच सकती है।

पशु भाव के पूजन से कामना की पूर्ति, वीर भाव से ऐश्वर्यता लाभ और दिव्य भाव से मुक्ति की प्राप्ति होती है। इन तीनों प्रकार के पूजन में कोई भी भाव हो इसके द्वारा साधक के दुश्मनों का निश्चित विनाश होता है।

उपासकों को यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है। बिना श्रद्धा के कोई साधन सिद्ध नहीं होता है अतएव अपने इष्ट के प्रति परम श्रद्धा होना आवश्यक है साथ ही ध्यान और मन्त्र के यथार्थ अर्थ को जानते हुये उसका जप करनी भी उचित है इसके सिद्ध होने पर मनोकामनाओं को पूर्ति आवश्यक होती है।

प्रस्तुत पुस्तक में भगवती दक्षिणा काली की सरल उपासना बिधि दी गई है, साथ ही भगवती के स्तोत्र आदि विषय भी दिये गये हैं। काली के उपासकों को चाहिये आदि ब्रह्मस्वरूपा भगवती के ध्यान, जप; पूजन द्वारा यथोचित लाभ प्राप्त करें।

भवदीय :

—श्यामानन्द शास्त्री

प्रकाशक व प्राप्ति स्थान :-

श्री लोकनाथ पुस्तकालय

१७३, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता-७

काली सामान्य पूजन विधि

मन्त्र

काली तन्त्र के अनुसार दक्षिणी काली का साधन मन्त्र यह है

१—क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्री दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। यह सब मन्त्रों में श्रेष्ठ मन्त्र है। इसके वर्णो का अभिप्राय इस प्रकार है—जल रुपी ककार मुक्ति को देने वाला हैं, अग्नि रूपी रेफ सर्वतेजोमयी है। क्रीं क्रीं क्री—यह सृजन, स्थिरता और प्रमादके द्योतक हैं। बिन्दु, निष्फल, ब्रह्म रुप है। अतः यह कैवल्य प्रदान करता है। हुं हुं—शब्द ज्ञान प्रदान करते हैं। ह्रीं ह्रीं इह दोनों बीज सृजन, स्थिरता और प्रलय का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब दक्षिण कालिका को सम्बोधन किया जाता है तो इससे देवी की समीपता अभिप्रेत हैं। स्वाहा से विश्व के मातृ रुप का बोध होता है! यह सर्व पापों को हरने वाला हैं।

दक्षिणी कालीके अन्य मन्त्र इस प्रकार हैं—

२—क्रीं एकाक्षर मन्त्र है। यह महा मन्त्र सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला हैं।

३—ह्रीं दूसरा एकाक्षर मन्त्र हैं। इस मन्त्र से उपासना करने पर उपासक सब शास्त्रों का ज्ञाता हो जाता है। इस दोनों एकाक्षर मन्त्रों का पुरश्चरण एक लाख मन्त्र जप का है और

दशांश हवन का विधान चूड़ामणि हैं। तन्त्र के अनुसार दिन में एक लाख मन्त्र और रात में एक लाख मन्त्रका जप का विधान है रात्रि—जप से दक्षिण कालिका की सिद्धि होती हैं।

काली तन्त्र में काली के अन्य मन्त्र भी लिखें हैं-

४—ओं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं।

इसका एक लाख का पुरश्चरण होता हैं और दशाँश हवन विश्वसार तंत्र के अनुसार उपरोक्त मन्त्र में स्वाहा मिलने पर यह २३ अक्षर का मन्त्र हो जाता है। इस २२ अक्षर वाले मन्त्र में से जब प्रणव को अलग कर दिया है तो २२ अक्षर बन जाता है यथा—

५—ॐ ह्रीं ह्रीं हुं हू क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

प्रणव और स्वाहा हटा देने पर २० अक्षर का मन्त्र बन जाता हैं।

६—ॐ ह्रीं क्रीं में स्वाहा यहमन्त्र का राजा विख्यात है इसका नाम काली हृदय भी हैं।

विश्वसार तन्त्र में कुछ और मन्त्रों का निर्देश है-

७—क्रीं ह्रीं हूं यह महाकाली का मन्त्र हैं—जिसको स्वयं महाकाली ने कहा हैं—

८—क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।

९—क्रीं क्रों फट् स्वाहा ।

१०—ऐं नमः क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा ।

११—क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके स्वाहा ।

१२—क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके फट् ।

१३—क्रों क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

१४—क्रीं क्रीं हुं हुं क्रीं क्रीं स्वाहा ।

१५—क्रीं हुं ह्रीं क्रीं स्वाहा ।

१६—क्रीं हुं ह्रीं क्रीं हुं ह्रीं स्वाहा ।

१७ - क्रीं हुँ ह्रीं क्रो हुं ह्रीं स्वाहा ।

१८ - क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं हुँ हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

१९—क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा ।

२०—नम एँ ह्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा ।

२१—नमः आं आं क्रीं क्रीं फट् स्वाहा ।

२२—क्रीं क्रीं क्रों फट् स्वाहा

२३—क्रीँ क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा ।

२४—ऐं नमः क्रीं क्रीं कलिकायै स्वाहा ।

२५—क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा ।

२६ - क्रां हूं ह्रों दक्षिणे कालिके फट् ।

२७ क्रीं क्राँ हूं हूं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ।

२८—ह्रां ह्रां स्वाहा ।

२६—क्रीं स्वाहा ।

३०—क्रीं हुं ह्रां स्वाहा ।

३१—क्रों क्रों क्रों हूं हूं ह्रां ह्रां स्वाहा ।

३२—क्रों दक्षिण कालिके स्वाहा ।

३३—क्रीं हुं ह्रीं क्रीं ह्रीं स्वाहा ।

३४—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रों क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

३५—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं क्रों क्रों ह्रों ह्रों स्वाहा

माया तन्त्र में यह लिखा गया है-

३६—नमः ऐं क्रीं क्रों कालिकायै स्वाहा ।

तन्त्रान्तर में यह मन्त्र है…

३७—नमः ॐ क्रां क्रों क्रीं फट् स्वाहा कालि कालिके हुम्

विनियोग

ॐ अस्य दक्षिणकालिकामन्त्रस्य महाकालभैरव ऋषिः उष्णिक छन्दः श्रीदक्षिण कालिका देवता; क्रं बीजं, ईं शक्ति रं कीलकम् चतुर्वर्गसिध्यर्थं जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यासः

शिरसि महाकाल भैरवऋषये नमः दायें अंगूठे से

मुखे उष्णिकूछन्दसे नमः मध्यमा अनामिका से

हृदय श्रीदक्षिण कालिका देवतायै नमः — तर्जनी मध्यमा अना० कनिष्ठा से
गुह्यकं बीजाय नमः — तत्वमुद्रा से
पादयोः ईं शक्तये नमः — मध्यमा से
सर्वांगे रं कीलकाय नमः — करतल द्वय से

करन्यास

क्रीं अगुष्ठाभ्यां नमः क्रीं तर्जनीभ्याँ स्वाहा, क्रूं मध्यामाभ्यां वषत् क्रैं अनामिकाभ्यां हूं, क्रौं कनिष्ठकाभ्याँ वौषट् क्र करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

षडंगन्यास

क्रां हृदयाय नमः	अनामिका, मध्यमा, तर्जनी से
क्रीं शिरसे स्वाहा	„ „
क्रू शिखायै वषट्	मूठ बांधकर अंगूठे से
क्रै कवचाय हुम्	दोनों करतलों से
क्रौं नेत्रयाय वौषट्	तर्जनी, मध्यमा, अनामिका से
क्रः अस्त्राय फट्	दक्ष तर्जनी माध्यमा से वायीं हथेली में फटकार कर।

व्यापक न्यास

यह न्यास मूल मन्त्र को उच्चारण कहते हुए किया जाता है। इसे ३-५ या ७ बार सिर से पाँव तक और फिर पांव से सिर तक करना होता है।

ध्यान

सद्यःश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तेर्वरं बिभ्रती
घोरास्या शिरसाँ स्रजा सुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलिम्
सृक्कासृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतिं
श्यामाँगी, कृतमेखला शवकरैः, देवीं भजे कालिकाम्

काली का वर्ण बिजली की ज्योति की तरह, उनके सर के केश खुले हुए व बिखरे हुए हैं और मस्तक पर अर्ध चन्द्र शोभा पा रहा है। उन्होने अपनी लाल व लपलपाती जिह्वा को दांतों तले दबा रखा है और उसे बाहर निकाले हुए है ओष्ठों से रक्त प्रवाहित हो रहा है। उसके तीन नेत्र हैं। आभूषणों के रूप में वह कानों में शिशुओं के शव ग्रहण किये है। उनके चार हाथ हैं बाये ऊपर वाले में खंगा, नीचे वाले मुण्ड, दक्षिण उप वाले अभय मुद्रा और नीचे वाले में वर मुद्रा है। उनके गले में ५० मुण्ड की माला है और कमर में शव के हाथो की कांची हैं। वे नित्य युवती रूपी में प्रसन्न मुद्रा में स्थित रहती है।

अथ जप विधानम्

ध्यान के बाद मूल मन्त्र का जाप करना चाहिए। जप कम से कम १ माला अर्थात १०८ मन्त्रों की तो होनी चाहिये। जप इष्ट देवता का सर्वोपरि ध्यान हैं।

काली की विशिष्ट पूजा विधि

प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नानादि आवश्क कृत्यों से निवृत्त होकर साधना पर बैठे। साधना का स्थान शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। वहाँ अधिक व्यक्तियों का आना-जाना न हो तो अच्छा है। साधना में विघ्न उपस्थित होता है और साधना से ध्यान हटता है। शुद्ध आसन पर स्थित होकर पवित्र मन से साधना का संकल्प करे। पूजा के लिये ताम्रपात्र पर काली का यन्त्र खुदवा लिया जाए तो श्रेष्ठ है क्योंकि उसे हर बार पूजा के उपयोग में लाया जा सकता है यदि यह सुविधा उपलब्ध न नो सकतीं हो तो रोली, हल्दी गेहूं के आटे और मवाला से देवमूर्ति के सामने काली का यन्त्र बनाए क्योंकि देव पूजन के साथ यन्त्र पूजन का भी विधान है। सभी पूजन सामग्री को अपने पास एक पात्र ही रख लेना चाहिए ताकि बार-बार आसन से उठना न पड़े। पूजम विधि इस प्रकार है।

स्वस्ति वाचन

ॐ गणानात्वा गणपति ॐ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ॐ हवा महे निधीनां त्वां निधि पति ॐहवामहे बसोमम आहमजानि गर्भधम त्वमजासि गर्भधम्॥ १॥

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः— स्वस्तिस्ताक्षार्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ २ है

ॐ पयः पृथिव्यां पय औषधिषु पयो दिव्यन्तरिक्षपयोधा पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ ३ ॥

ॐ विष्णोः रराट मसिविष्णोः शनप्त्रोस्थोः विष्णोः स्यूरसि विष्णोध्रुवोसि वैष्णपमसि विष्णवेत्वा ॥ ४ ॥

ॐ अग्निर्देवता व तो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ५ ॥

ॐ द्यौः शान्तिरिक्ष ॐ शान्ति पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्दिर्वश्वेदेवा शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व ७ं ॐ शान्तिः शांतिरेव शान्ति सामा शान्तिरेधि ॥ ६ ॥

ॐ विश्वानिदेवा सवितुर्दरितारि परासुव। यद्भद्रम् तन्न अ सुवा ॥ ७ ॥

ॐ शान्तिः ! शान्ति !! शान्ति !!!

आचमन

निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए तीन बार आचमन करे और मस्तक पर जल छिड़के। साथ साथ यह भावना भी करनी चाहिए कि इस जल के साथ सात्विक राजसिक और तामसिक तीनों प्रकार की शक्तियों से साधक ओत-प्रोत हो रहा है।

१. ॐ केशवाय नमः स्वाहा।

२. ॐ नारायण नमः स्वाहा।

३ ॐ माधवाय नमः स्वाहा।

पवित्रीकरण

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोपिवा।
याः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सवाह्या भ्यन्तरः शुचिः॥

उपरोक्त मन्त्र का पाठ करते हुए तीन बार जल अपने आसन व शरीर पर छिड़के और यह भावना करे कि हमारा वाहरी एवं आन्तरिक शरीर साधना के उपयुक्त पवित्र हो रहा है।

भूत—शुद्धि

ओ३म् अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञयाः॥

श्री गणेश ध्यान

हाथ में जल पुष्प, चावल और दूर्वा लेकर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करे।

ओ३म् सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नतस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥

जन सामग्री को गणेशजी के निकट ही समर्पित करके।

अथ संकल्प

किसी भी कार्य को करने से पूर्व श्रद्धा और विश्वास पूर्वक किया गया दृढ संकल्प सफलता का चिन्ह माना जाता है। अतः पवित्र मन से दांये हाथ में जल, तिल, कुश, और यज्ञोपवीत लेकर निम्न संकल्प वाक्य का पाठ करे—

हरिः ॐ तत्सत् ओ३म् नमः परमात्मनने श्रीपुराणषोत्तमाय श्रीमद् भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्तन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे, जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्त र्गते क्षेत्रे षष्ठिसंवत्सराणां मध्ये 'अमुक' नामानि, संवत्सरे अमुक, अयने अमुक ऋतौ, अमुक मासे, अमुक, पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक क्षेत्रे, 'अमुक योगे, 'अमुक वासरे अमुक राशिस्थिते सूर्य चन्द्रे भौमे वुध बृहस्पतौ शुक्रे शनी राहौ केतौ एवं गुण विशिष्टियां तिथौ 'अमुक, गोत्रोत्पन्न 'अमुक,नाम्नि शर्मा हं बर्मादिऽहं धर्मार्थ कान मोक्षहेतवे श्रीगणपतिपूजनम महं-करिष्ये।

सङ्कल्प वाक्य में जहाँ-जहां अमुक शब्द लिया हुआ है उसके अनुकुल उपयुक्त शब्दों का उच्चारण करना चाहिए जैसे कि विधमा, संवत्सर अयन, ऋतु, मास पक्ष, तिथि, नक्षत्र योग दिन सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने नाम और अपने गोत्र और नाम का पाठ करे। ब्राह्मण

अपने नाम के साथ 'शर्माऽहं क्षत्रिय—'वर्माहं और वैश्य गुप्तऽहं का पाठ करें।

काली का ध्यान



निम्न मन्त्रों का पाठ करते हुये भगवती काली का ध्यान करें—

या कालिका रोगहरो सुवन्द्या
वैश्यैः समस्तै र्व्यवहार दक्षैः॥
जनैर्जनानां भयहारिणी च
सा देवता मा मयि सौख्यादात्री।
या माया प्रकृतः शक्तिश्चण्डमुण्ड विमर्दिनी।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव॥२॥
विश्वेश्वरी त्वं परिपासि विश्वम्।
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्॥
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ४ ॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेऽष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतिधियां हृदयेषु बुद्धिः
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्ययां लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥५॥

आवाहन

निम्न मन्त्र का पाठ करते हुए भावना करे कि भगवती काली का आगमन पूजा स्थल पर हो रहा है।

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनी।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शँकर प्रिये॥

निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए भावना करे कि भगवती ने अपना आसन कृपा पूर्वक ग्रहण कर लिया है।

आसन

अनेक रत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

पाद्यम्

गंगागोदिसर्वतीर्थभ्यो मया प्रार्थनयाऽहृजलम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

अर्घ्य

निम्न मन्त्र का पाठ करते हुए थोड़ा जल पृथ्वी पर छोड़े—

गन्ध पुष्पाक्षतैर्युक्तं मध्ये सम्पादितं मया।
गृहाणत्वं महादेवि प्रसन्नो भव सर्वदा॥

आचमन

निम्न मन्त्र का पाठ करते हुए थोड़ा जल पृथ्वी पर छोड़े—

आचम्यतां त्वया देवि भक्तिं मेह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परांगतिम्॥

स्नान

'जाह्नवी तोयमानीतं शुभ कर्पूरसंयुतम्।
स्नापयामि सुरश्रेष्ठ त्वां पुत्रादिफलप्रदाम्॥

पंचामृत स्नान

'पयोदधि घृतं क्षौद्र सितया च समन्वितम्।
पंचामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे॥

शुद्धोदक स्नान

परमानन्दबोधब्धिनिमग्ननिजमूर्तये।
साँगोपाँगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमाश ते॥

वस्त्र समर्पण

'वस्त्र' च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् ।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥

उपवस्त्र समर्पण

'यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा ।
तस्यै ते परमेशावै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥

मधुपर्क

दधिमध्वाज्यसंयुक्त पात्रयुग्मसमन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने ॥

गन्ध

परमानन्द सौभाग्य परिपूर्ण दिगन्तरे ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि ॥

कुंकुम

कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुंकमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥

आभूषण

स्वभाव सुन्दराङ्गे नानाशक्त्याश्रिते शिवे ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥

सिन्दूर

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् ।
पूजितासि मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥

कज्जल

चक्षुभ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारिके ।
कर्पूर ज्योतिस्त्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥

सौभाग्य सूत्र

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणि संयुते ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ॥

गन्ध द्रव्य

चन्दनागरु कर्पूरकुंकुमँ रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादिसुगन्धश्च सर्वांगेषु विलेपये ॥

अक्षत

रञ्जितः कुंकुमैघेन अक्षताश्चपि सुशोभनाः ।
ममैषा देवि दानेन प्रसन्ना भव पार्वती ॥

पुष्प

मन्दारपारिजातानि पाटलीकेतकानि च ।
आदि चम्पक पुष्पाणि गृहणेमानि शोभने ॥

पुष्प माला

सुरपुष्पनिचयैर्ग्रथितां शुभ मालिकाम् ।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥

विल्वपत्र

अमृतोद्भव श्री वृक्षो महादेवि प्रियः सदा ।
विल्वपत्र प्रयच्छामि पवित्रः ते सुरेश्वरी ॥

धूप

दशांग गुग्गुल धूपं चन्दना गरुसंयुतम् ।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम् ।

दीपक

घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्जवलत् ।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥

नैवेद्य

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिःसमन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मेह्यचलां कुरु ॥

ऋतुफल

'द्राक्षा खर्जूर कदलीपन साम्रकर्किम् ।
नारिकेलेक्ष जम्ल्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥

आचमन

'कामारि वल्लभे देवि कुर्वाचमनाम्बिके।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके॥

अखण्ड ऋतुफल

नारिकेल च नारंग कलिंग मञ्चिरं तथा।
उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम्॥

ताम्बूल

एलालवंगकस्तूरीकर्पूरैः श्रेष्ठवासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थं समर्पयामि सुरेश्वरि॥

दक्षिणा

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरी।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान कुरु मनोरथाः॥

नीराजन

इस मन्त्र का पाठ करते हुए आरती करनी चाहिए।
नीराजनं सुमंगल्य कर्पूरेण समन्वितम्।
चन्द्रार्कवन्हिसदृशं महादेवि नमोऽस्तुते॥

प्रदक्षिणा

निम्न मन्त्र का पाठ करते हुए प्रदक्षिणा करें—
'नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते इप्सितप्रदम्।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले॥

साष्टांग प्रणाम

निम्न मन्त्र का पाठ करते हुए दण्डवत् प्रणाम करें—

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधार हेतवे।
साष्टांगोऽयँ प्रणामस्तु प्रयत्नेन मयाकृतः ॥

इसके बाद आरती, चालिसा व स्तोत्रों आदि का श्रद्धा पूर्वक पाठ करना चाहिए।

विसर्जन

अन्त में निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी से पूजन समय तक उपस्थित रहने का धन्यवाद दे और निवेदन करे कि वे अब अपने धाम को पधार सकती हैं—

इमां पूजाँ मया देवि यथा शक्त्यु पासिताम्।
रक्षार्थत्वं समादाय व्रजस्थान अनुत्तमम् ॥

अथ काली प्रातः स्मरण स्तोत्र

ॐ प्रातर्नमामि मनसा त्रिजगद्विधात्री, कल्याणदात्री कमलायताक्षीम्। काली कलानाथकलाभिरामां, कादम्बिनीमेचक काय कान्तिम् ॥ १ ॥

जगत्प्रसूते द्रुहिणो यदर्च्चां, प्रसादतः पाति मुरारिहन्ता। अन्ते भवो हन्ति भवप्रशात्यै, तां कालिकां प्रातरहं भजामि ॥ २ ॥

शुभाशुभैः कर्मफलैरनेकजन्मनि मे संचरतो महेशि। माभूत्वदार्चियपि से पशुभिश्च गोष्ठी। दिवानिशां, स्यात्कुलमार्ग सेवा ॥ ३ ॥

वामे प्रिया शाम्भवमार्गनिष्ठा पात्रं करेस्तोत्रमये मुखाब्ज ध्यानहृदब्ज गुरूकौलसेवा स्युर्मे महाकालि तव प्रसादात् ।४।

श्रीकालि यायः परमेश्वरि त्वां प्रातः समुत्थाय नमामि नित्यम् । दीनोऽसयनाथेऽस्मि भवातुरोऽस्मि मां पाहि संसार-समुद्रगग्नम् । ५ ।

प्रातः स्तवर्यः परदेवतायाः श्रीकालिकायाः शवनावसाने । निस्यं पटेत्तस्य स्मुखावलोकादानन्दवन्दां कुरितम्मनयात् । ६ ।

काली कवच

कैलासशिखरारूढं भैरवं चन्द्रशेखरम् ।
वक्षःस्थले समासीना भैरवी परिपृच्छति ।
देवेश ? परमेशान । लोकानुग्रहकारक ।
कवचं सूचितं पूर्वं किमर्थं न प्रकाशितम् ।
यदि मे महती प्रीतिश्तवास्ति कालभैरव ।
कवचं कालिकादेव्याः कथयस्वानुकम्पया ।
अप्रकाश्यमिदं देवि नरलोके विशेषतः ।
लक्षवारं वारितासि स्त्रीस्वभावद्धि पृच्छसि ।
सेवका बहवो नाथ, कुलधर्म परायणाः ।
यतऽते त्यक्तजीवाशा शवोपरि चितोपरि ।
तेषां प्रयोगसिद्धयर्थं स्वरक्षार्थं विशेषतः ।
पृच्छामि बहुशो देव कथयस्व दयानिधे ।

कथयामि शृणु प्राणे कालिका कवचं परम् ।
गोपनीयं पशोरग्रे स्वयोनिमपरे यथा ॥

अस्य कलिकाकैत्रचस्य भैरव ऋषिः उष्णिक छन्दः अद्वैतरूपिणी श्रीदक्षिणकालिका देवता, ह्रीं बीजं हूं शक्ति, क्रीं कीलकं सर्वार्थ साधना-पुरःस्सर मन्त्र सिद्धौ विनियोगः ।

सहस्रारे महापद्मे कर्पूरधवलो गुरुः ॥
बामोरुस्थितच्छक्तिः सदा सर्वत्र रक्षतु ॥
परमेशः पुरा पातु परा परगुरुस्तथा ।
प मेष्ठी गुरुं, पातु दिव्यसिद्धिश्च मानवः ।
महांदेवी सदा पातु महादेवः सदावतु ।
त्रिपुरो भैरवः पातु दिव्यरूपधरः सदावतु ।
ब्रह्मानन्दः सदा पातु पूर्णदेव, सदावतु ।
चलश्चित्तः सदाः पातु चेलाञ्चलश्चपातु माम् ॥
कुमारः न क्रोधश्चैव वरदः स्मरदीपनः ।
माया मायावतो चैव सिद्धौघाः पातु सर्वदा ॥
विमलो कुशलश्चैव भीमसेनः सुधाकरः ।
मीनो गोरक्षकश्चैव भोजदेवः प्रजापतिः ।
मूलदेवो रन्तिदेवो विघ्नेश्वर हुताशनः ।
सन्तोष समयानन्द पातु मां मानवाः सदा ।
सर्वेऽप्यानन्दनाथान्त अम्बा तां मातरं क्रमात् ।
गणनाथ सदा पातु भैरव पातु माम् सदा ॥

बटुको नः सदा पातु दुर्गा मां परिरक्षतु।
शिरसः पादपर्यन्तं पातु मां घोरदक्षिणा।
तथा शिरसि मां काली हृदि तूले च रक्षतु।
सम्पूर्णविद्यया देवी सर्वत्र मम रक्षतु।
क्रीं क्रीं क्रीं वदने पातु हृदि हूं हूं सदावतु।
ह्रीं ह्रीं पातु सदाधारे दक्षिणे कालिके हृदि।
क्रीं क्रीं क्रीं पातु मे पूर्वे हूं हूं दक्षिणे सदावतु।
ह्रीं ह्रीं माम् पश्चिमे पातु हूं हूं पातु सदोत्तरे॥
पृष्ठे पातु सदा स्वाहा मूला सर्वत्र रक्षतु।
षड्गे युवती पातु खड्गेषु सदैव माम्॥
मंत्रराजः सदा पातु ऊर्ध्वाधो दिग्विदिक्स्थितः।
चक्रराजे स्थितश्चापि देवताः परिपान्तु मा॥
उग्र उग्रप्रभा दीप्ता पातु पूर्वे त्रिकोणके।
नीला घना वलाकाच तथापागत्रिकोणके॥
काली कपालिनी कुलङ्गाकुरुकुल्ला विरोधिनी।
वन्हि षष्कोणके पातु विप्रचत्ता तथा प्रिये॥
सर्वा श्यामः खड्गधरा वामहस्तेन तर्जनी।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु नारायणी तथाग्निके॥
माहेश्वरी दक्षदले चामुण्डा रक्षसेऽवतु।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता।
वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु॥

ऐं ह्रों अतिसारः पूर्वे भैरव परिरक्षतु ।
ऐं ह्रों रुरुश्चाग्निकोण ऐं ह्रीं चण्डके दक्षिणे ॥
ऐं ह्रों क्रोधो नैऋतेऽव्यात् ऐं ह्रों उन्मत्तकस्तथा ।
पश्चिमे पातु ऐं ह्रीं मां कपाली वायुकोणके ॥
ऐं ह्रों भीषणाख्यश्च उत्तरेऽवतु भैरवः ।
ऐं ह्रों संहार ऐशान्यां मातृणामङ्गा शिवाः ।
ऐं हेतुको बटुकः पूर्वदले पातु सदैव माम् ।
ऐं त्रिपुरान्तको बतुक आग्नेयां सर्वदावतु ।
ऐं वन्हि वेतालो बटुको दक्षिणे मां सदावतु ।
ऐं अग्निजिह्वबटुकोऽव्यातत् नैऋत्यां पश्चिमे तथा ।
ऐं कालबटुकः पातु ऐं करालबटुकस्तथा ।
वायव्यां ऐं एकः पातु उत्तरे बटुकोऽवतु ॥
ऐं भीमवटः पातु ऐशान्यः दिशि मां सदा ।
ऐं ह्रों ह्रीं ह्रू फट् स्वाहान्तश्चतुः षष्टिमातरः ।
ऊर्ध्वाधो दक्षवामाग्रे पृष्ठदेशेतु पातु माम् ।
ऐं हूं सिंहव्याघ्रमुखी पूर्वे मां परिरक्षतु ।
ऐ कां क्रीं सर्पमुखी अग्निकोणे सदाऽवतु ।
ऐ मां मां मृगमेषमुखी दक्षिणे मां सदावऽतु ।
ऐं चौं चीं गजराजमुखी नैऋत्यां मां सदाऽतु ।
ऐं में में विडालमुखी पश्चिमे पातु मां सदा ।

ऐं खौं खौं क्रोष्टुमुखी वायुकोणे सदावतु ।
ऐं ह्रां ह्रां ह्रस्वदीर्घमुखी लम्बोदरमहोदरी ॥
पातु मामुत्तरे कोण ऐं ह्रौं ह्रौं शिवकोणके ।
ह्रस्वजघतालजंघप्रलम्बोष्टी सदाऽवतु ॥
एताः श्मशानवासिण्यो भीषणा विकृताननाः ।
पान्तु मां सर्वदा देव्यः साधकाभीष्टपूरिका ।
इन्द्रो गो पूर्वतो रक्षेदाग्नेय्यामग्निदेवता ।
बक्षे यमः सदा पातु नैऋत्यां नैऋतिश्च माम् ।
बरुणेऽवतु माँ पश्चात् वायुर्मा वायवेऽवतु ।
कुवेरश्चोत्तरे पातु ऐशान्यां तु सदाशिवः ।
ऊर्ध्वं ब्रह्मा सदा पातु अधश्चानन्तदेवता ।
पूर्वादिकस्थिताः पातु बज्राधाश्चायुधाश्चा ।
कालिकाऽवत तु शिरसि ह्रदये कालिकाऽवतु ।
आधारे कालिका पातु पादयोः कालिकाऽवतु ;
दिक्षु मां कालिका पातु बिदिक्षुः कालिकाऽवतु ।
ऊर्ध्वं मे कालिका पातु अधश्च कालिकाऽवतु ।
चर्मश्रृङ्ः मांसमेदाऽस्थिज्जाशुक्राणि मेऽवतु ।
इन्द्रियाणि मनश्चैव देहि सिद्धि च मेऽवतु ।
अकेशात् पादपर्य्यन्तं कालिका मे सदाऽवतु ।
वियति कालिका पातु पथि मां कालिकाऽवत ।

शयने कालिका पातु सर्वकार्येषु कालिका।
पुत्रान् मे कालिका पातु धनं मे पातु कालिका।
यत्र मे शंशलाविष्टास्ता नश्यन्तु शिवाज्ञया।
इतीदं कवचं देवि ब्रह्मलोकेऽपि दुर्लभम्॥
तव प्रीत्या मया ख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत्।
तव नाम्नि स्मृते देवि। सर्वयज्ञफलं लभेत्॥
सर्वपाप क्षयं याति वाञ्छा सर्वत्र सिध्यति।
नाम्नाः शतगुणः स्तोत्रं तस्मात् शताधिकम॥
तस्माद् शताधिको मन्त्रः कवच तच्छताधिकम्।
शुचिः समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वितः॥
हंस्थाप्य वामभागे तु शक्ति स्वामिपरायणम्।
रक्तवस्त्रापरीधानां शिवमन्त्रधारा शुभाम्॥
या शक्तिः सा महादेवी हररूपश्च साधका।
अन्योऽन्यचन्तिानाद्देवि देवत्तमुपजायते॥
शक्तियुक्तो यश्रीद्देवी चक्रोवामनसापि वा॥
भोगैरश्च मधुपर्काद्यैस्ताम्बूलेश्च सुवासितै।
तयस्तु कवचं दिव्यं पठेदेकमनाः प्रिये।
तस्य सर्वार्थ सिद्धि स्यान्दात्र कार्या विचारणा।
इदंरहस्य परमं पर स्वस्त्यन मयत्।
यः सकृत्त पठेत्देवि कवचं देवदुर्लभम्॥

सर्वयज्ञफलं तस्य भवेदेव न संशयः ।
संग्रामे च जयेत् लोकान् मातंगानिव केशरी ॥
नास्त्राणि तस्य शस्त्रणि शरीरे प्रभवन्ति च ।
तस्य व्याधि कदासित् न दुःखे नास्ति कदाचन ॥
गतिस्तयैव सर्वत्र वायतुल्यः सदा भवेत् ।
दीर्घायुः कामभोगीशो गुरुभक्तिः सदा भवेत् ॥
अहो कवच माहात्म्यं पठमानस्य नित्यशः ।
विनापि नययोगेन योगीशं समतां व्रजेत् ॥
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं पुनः पुनः ।
न शक्ष्यामि प्रभावं तु कवचस्यस्य वर्णितम् ॥

त्रैलोक्य विजय कवच

श्री सदाशिव उवाच—

त्रैलोक्यविजयस्यास्य कवचस्य ऋषि शिवः ।
छन्दोऽनुष्टुप्देवता च आद्य काली प्रकीर्तता ।१।
मायाबीजं बीजमिति रमा शक्तिरुद्रहृता ।
क्रीं कीलकं काम्यसिद्धो विनियोगः प्रकीर्तिताः २।
ह्रीं माद्या मे शिरः पातु श्रीं काली वदनं मम ।
हृदयं क्रीं परा शक्तिः पातु स्कंधं परात्परा ।३ ।
नेत्रे पातु जगद्धात्री कर्णौ रक्षतु शंकरी ।
घ्राणं पातु महामाया रसनां सर्वमंगला ।४।

दन्तान् रक्षतु कौमारी कपोलौ कमलालया।
ओष्ठाधरौ क्षमा रक्षेच्चिबुकं चारुहासिनी।५।
ग्रीवां पातात्कुशानी ककुत्पातु कृपामयी।
द्वौ बाहू बहुदा रक्षेत्करौ कैवल्यदायिनी।६।
स्कन्धौ कपर्द्दिनी पातु पृष्ठं त्रैलोक्यतारिणी।
पार्श्वे पायादपर्णा कटिं मे कमलासना।७।
नाभौ पातु विशालाक्षी प्रजास्थानं प्रभावती।
ऊरू रक्षतु कल्याणी पादौ मे रक्ष पार्वती।८।
जयदुर्गावतु प्राणान्सर्वांगं सर्वसिद्धिदा।
रक्षाहीनंतु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।९।
तत्सर्वं मे सदा रक्षेदाद्या काली सनातनी।
इति ते कथितं दिव्यं त्रैलोक्यविजयाभिधम्।१०।
कवचं कालिकादेव्या आद्यायः परमाद्भुतम्।
पूजाकाले पठेद्यस्तु आद्याधितृप्तमानसः।११।
सर्वान्कामानवाप्नोति तस्याद्याशु प्रसीदति।
मन्त्रसिद्धिर्भवेदाशु किङ्कराः क्षुद्रसिद्धयः।१२।
अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी प्राप्नुयाद्धनम्।
विद्यार्थी लभते विद्यां कामी कामानवाप्नुयात्।१३।
सहस्रवृत्तपाठेन वर्म्मणोऽस्य पुरस्क्रिया।
पुरश्चरणसम्पन्नं यथोक्तफलदं भवेत्।१४।

चन्दना गुरुकस्तूरीकुंकुमै रक्तचन्दनैः

भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि । १५ ।

शिखायां दक्षिणे बाहो कण्ठे वा साधकः कटौ।

तस्याद्या कालिका वश्या वांछितार्थं प्रयच्छति । १६ ।

न कुत्रापि भयं तस्य सवत्र विजयी कविः।

अरोगी चिरजीवीस्या दुवलवान्धारणक्षमः। १७।

सर्वविद्यासु निपुणः सर्वश स्त्रर्थर त्ववित्।

वशे तस्य महिपाल भोगमोक्षौ करस्थितौ । १८।

कलिकल्मषयुक्तान्तं निःश्रेयकरं परम्। १९।

श्री जगन्मंगल कवच

भैरवे उवाच

काली पूजाश्रुता नाथ भावाश्य विविधः प्रभो।

इदानीम् श्रोतु मिच्छामि कवचं पूर्वं सूचितम्।।

स्वमेव शरणं नाथ त्राहि मां दुःख संकटात्।

सर्व दुःख प्रशमनं सर्व पापं प्रणाशनम्।

सर्व सिद्ध प्रदं पुण्यं कवचं परमाद्भुतम्।।

अतो वै श्रोतुमिच्छामि वद मे करुणानिधे।

श्री भैरव उवाच

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राण वल्लभे।

श्री जगन्मंगलं कवचं मन्त्र विग्रहा।।

पठयित्वा धारयित्वा त्रैलोक्यं मोहयेक्षणात्।
नारायणोऽपि यद्धत्वा नारीं भूत्वा महेश्वरम्॥॥
योगिनं रक्षो भगवति यद्धत्वा च रघूद्वहः।
वरदीप्तां जघानैव रावणादिनिशाचरान्॥
यस्य प्रसादा दीशोऽपि त्रैलोक्य विजयी प्रभुः।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः
एवं च सकला देवाः सर्व सिद्धिश्वरः प्रिये।
ॐ श्री जगन्मंगलस्याय कवचस्य ऋषिः शिवः।
छन्दोनुष्टुप् देवता च कालिका दक्षिणेरिता।
जगतां मोहने दुष्ट विजये भुक्तिमुक्तिषु।
योविद्राकर्षणं चैव विनियोगः प्रकीर्तितः

कवच

शिरो मे कालिका पातु, क्रींकारैकाक्षरी परा।
क्रीं क्रीं क्री मे ललाटं च कालिमा खड्गधारिणी।
हूं हूं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुतौद्वयम्।
दक्षिणो कालिके पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरि।
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम्॥
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी॥
द्वाविंशत्वक्षरी स्कन्धौ महाविद्याखिलसदा॥
खड्गमुण्डधरा काली सर्वांगमभितोऽवतु॥

क्रीं हूं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम,
ऐं हूं ॐ स्तन द्वन्द्वौ ह्रीं फट् स्वाहा कुकुत्स्थलम्।
अष्टाक्षरी महाविद्यां भुजौ पात सकर्तृका,
क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रां ह्रां पातु करी षड्क्षरी मम।
क्रीं नाभिं मध्देशं च दक्षिणे कालिकेऽवतु,
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठे च कालिका सा दशाक्षरी।
क्रीं मे गुह्यं सदापातु कालिकायै नमोस्तुते,
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिताः,
ह्रीं ह्रां दक्षिणे कालिके हू हूं पातु कटिद्वयम्।
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहान्ता चारुयुग्मवम्
ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु जान्दुनी कालिका सदा।
काली हृन्नामविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा।
क्रीं हूं ह्रीं पातु सा गुल्फा दक्षिणे कालिकेऽवतु,
क्रीं हूं ह्रां स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरा मम्।
खड्ग मुण्डधरा काली वरदाभयधारिणी,
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वांगमभितोऽवतु।
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी,
विप्रचित्ता तथोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषा।
नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रा मिता च माम्।
एताः सर्वा खड्गधरा मुण्डमाला विभूषणाः।

रक्षन्तु माँ दिग्विदिक्ष ब्राह्मी नारायणी तथा,
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी च पराजिता,
वाराही नारसिंही च सर्वाश्चपामित भूषणाः
रक्षन्तु त्ववायुधे दिक्षु माँ यथो यथा।
इति ते कथितं दिव्यै कवचं परमाद्भुतम्
श्री जगन्मंगलं नाम महामन्त्रौघविग्रहम्।
त्रैलोक्यामर्षण ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम्,
गुरु पूजां विधायाथ विधिस्प्रठेत्ततः।
कवच त्रिःसकृद्वापि यावज्ज्ञानः नं च वा पुनः,
प्रयच्छातार्धमावृत्य त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।
त्रैलोक्यं क्षोभयत्मेव कवचस्य प्रसादात्।
महाकविभवेन्मासात् सर्वसिद्धिश्वरो भवेत्।
पुष्पाञ्जलिं न. कालिका यै मूलेनैव पठेत्सकृत्।
शतवर्षसहस्राणाँ पूज्यायाः फलमाप्नुयाद्।
भूर्जेज विलिखितं चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद्यदि।
शिखायां दक्षिण बाहौ कण्ठे वा धारणाद्बुधः।
त्रैलोक्यं मोहयेत्क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात्
पुत्रवान धनवान् श्रीमान नाना विद्यानिधिर्भवेत्
ब्रह्मास्रादीनि शरणाणि तद्गात्र स्पर्शशात्ततः।
नासमायान्ति सर्वत्र कवचस्यात्य कीर्तनात्

मृत्रवत्सा च या नारी वन्ध्या वा मृतपुत्रिणी,
कण्ठे वा वामबाहौ वा कवचस्यधारणात्।
बह्वपत्या जीवत्माभवत्येव न संशयः
न देयं परिशिष्येभ्यो ह्ययभक्तेभ्यो विशेषतः।
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात्
स्पर्धामुद्धृय कमला वाग्देवी मन्दिर मुखे।
पौत्रान्तं स्थैमास्थाय निवृत्ये निश्चितम्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्दक्षकालिकाम्।
शतलक्षं प्रजप्वापि तस्य विद्यानि सिद्धयति,
सहस्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।
जपेक्षादो जपेदन्ते पत्नवाराण्यनुक्रमात्।
नोघृत्य यत्र कुत्रापि गोपनोयं प्रयत्नतः।
लिखित धं स्वर्णपात्रै वै पूजाकाले तु साधकः।
मूर्ध्नि धार्य प्रयत्नेन विद्यारत्नं प्रपूर्येत्।

श्री कालिकाष्टक

ध्यान—

गलद्रक्तमुण्डावली कंठमाला
महाघोररावा सुदंष्ट्रा कराला।
विवस्त्रा श्मशानालया मुक्तकेशी,
महाकाल कामाकुला कालिकेयम्।

भुजे वायुयग्मे शिरोद दिधाना:
वरं दक्षयुग्मेभयं वै तथैव।
सुमध्यापि तुगंस्तना भारनम्रा,
लसद्रक्तसृक्कद्वका सुस्मितास्या।
शवद्वन्द्ववर्णावतंसा सुकेशो,
लसत्प्रेतपाणि प्रयुक्तैककांची।
शवाकार्मंचाधिरूढ़ा शिवाभिः
श्चतुर्दिक्षशब्दायमानाभिरेजे।

स्तुति

विरंच्यादि देवातयस्ते गुणास्त्रीम्,
समाराध्यकालीं प्रधाना बभूवुः।
अनादिं सुरादिं मुखादिं भवादिम्,
स्वरूप त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।१।
जगन्मोहनीयम् तु वाग्वादिनीयम्;
सुहृद्पोषिणी शत्रु संहारणीम्
वचस्तम्भनीयम् किमुच्चाटनीयम्;
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।२।
इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली,
मनोदाश्तु कामान्पयथार्थं प्रकुर्यात्
तथा ते कृतार्थो भवन्तीति नित्यं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा।३।

सुरापानमत्ता सुभक्तानुरक्ता,

लसत्पूतचित्ते सदाविर्भवस्ते

जपध्यानपूजासुधौतपंका

स्वरूपं त्वदीपं न बिन्दन्ति देवाः ।४।

चिदानन्दकन्दं हसन्मन्दमन्दं,

शरच्चन्द्रकोटिप्रभापुञ्जबिम्बम् ।

मुनीनां कवीनां हृदि द्योतयन्तं

स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।५।

महामेघकाली सुरक्तापि शुभ्रा,

कदाचिद्विचित्राकृतिर्योगमाया ।

न बाला न वृद्धा न कामातुरापि,

स्वरुपंत्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।६।

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं,

महा लोकमध्ये प्रकाशीकृतंयद् ।

तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्

स्वरुपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।७।

यदि ध्यानयुक्तं पठेद्यो मनुष्य,

स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च ।

गृहे चाष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्ति ।

स्वरुपं त्वदीयं न विन्दन्तिःदे ।८।

यदि ध्यानयुक्तं पठेद्यो मनुष्य,
　　स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे याष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः,
　　स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।६।
॥ इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचित श्री कालिकाष्टकम् ॥

काली अष्टोत्तर शतनाम

काली के इस शतनाम का नित्य प्रति श्रद्धापूर्वक पाठ करने से देवी प्रसन्न होती है और हर प्रकार के भय से रक्षा करती हैं। भय रक्षा के लिये यह अनुभूत साधन है।

काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी।
कालरात्रि कालिका च कालभैरव पूजिता ।१।
कुरुकुल्ला कामिनी न कमनीयत्वभामिनी।
कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी ।२।
कस्तूरिरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी।
ककारवर्णनिलया कमधेनुः करालिका ॥३॥
कुलकान्ता करालास्ता कामार्त्ता च कलावती।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी।
कामेश्वरी कामकान्ता कुंजरेश्वरगामिनी ॥५॥
काकदात्री काकहन्त्री कृष्ण चैव कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेहा च कलिनी दूल पीतुना ॥६॥

काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशांगो कला तथा,
क्रीं रूपा कुडगम्या च सकला कृष्णपूजिता ।७।
कृशांगी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी,
कम्बुकण्ठी कौलनी च कुमुदा कामजीवनी ८।
कलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका,
कामदेवकला कल्पलता कामांगबर्द्धिनी ।६।
कुन्ता च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका,
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी ।१०।

कुमारीपूजननरता कुमारीगणशोभिता,
कुमारीरञ्जनरता कौमारीव्रतधारिणी ॥११॥
कंकालीकमनीया च कामशास्त्रविशारदा,
कपालखट्वांगधरा कालभैरवरुपिणी ॥१२॥
कोटरी कोटराक्षी च काशीकैलासवासिनी,
कात्यायनी कार्यकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी ।१३।
कामाकर्णरुपा च कामपीठनिवासिनी,
कंकिनी काकिनी क्रीड़ा कुत्सिता कलहप्रिया १४
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिबर्द्धिनी,
कुम्भस्तनी कलाक्षा च काव्या कोकनदाप्रिया ।१५।
कान्तावासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा,
इति ते कथितं देवि गुह्ययाद्गुह्यतरम परम्।१६।

श्री कालिका सहस्त्रनाम स्तोत्र

श्री शिव उवाच—

कथितेऽयं महामन्त्र सर्वमन्त्रोत्तत्तत्रोत्तम,
यामासाद्य मया प्राप्तमैश्वर्यपनमुत्तमम् ।
संयुक्तः परया भक्त्या यथोक्तविधिना भवान्,
कुरुतामर्चनं देव्याः स्त्रैलोक्यविजिगीषया ।

श्री राम उवाच—

प्रसन्नो यदि मे देव ! परमेश ! पुरातन,
रहस्यं परमं देव्या कृपया कथय प्रभो ।
विनार्चनं विना होम् विना न्यासं विना बलिः,
विना गधं विना पुष्पं विना नित्योदितो क्रिया ।
प्राणायामं विना ध्यान बिना भूतविशोधनत्,
विना दानं बिना जापं येन काली प्रसीदति ।

शिव उवाच—

पृष्टं त्वयोत्तमं प्राज्ञ ! भृगुवंशसमुद्भव,
भक्तानामपि भक्तोऽसित्वमेव साधमिष्यसि ।
देवी दानवकोटिघ्नो लीलया रुधिरप्रियाम्
सदा स्तोत्रप्रिया मुग्रा कामकौतुकलालसा ।
सर्वदा नन्दहृदया मासवी स्तवमानसाम् ।
माध्वी कथत्यमांसानुरागिणो वैष्णवी पराम् ।।

श्मशानवासिनीं प्रेतगणनृत्यमहोत्सवाम्।
योगप्रभावा योगेशी योगीन्द्रहृदय स्थिताम्।
तामुग्रकालिकां राम ! प्रसीदयोंतुमर्हसि।
तस्याः स्तोत्रं परं पुण्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम्।
तव तद् कथयिष्यामि श्रुत्वा वत्वां वत्सावधारय।
गोपनीयं प्रत्यनेन · पठनीयं परात्पराम्।
यस्यैककालं पठनात् सर्वे विघ्ना समाकुलाः।
नश्यन्ति दहने दीप्ते पतंगा इव सर्वतः।
गद्यपद्यमयी वाणी तस्य रागाप्रवाहवत्
तस्य दर्शनमात्रो बादिवी सिष्प्रभां गताः।
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः।
राजनोऽपि दासत्वं भजन्ते किँ परे जनाः।
निशीथे मुक्तकेशस्तु नग्नः शक्तिसमाहितु।
मनसा चिंतयेत् कालो महाकालेन चालितां॥
पठेत् सहस्रनामाख्यं स्तोत्र मोक्षस्यसाधनम्।
प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्ररत्नेनानुकम्पते॥
यथां ब्रह्ममृतैर्ब्रह्मकुसुमै पूजिता परा।
प्रसीदति यथानेन स्तुता काली प्रसीदति॥

श्री दक्षिण काली सहस्त्र नाम स्तोत्र

अस्य श्रीदक्षिणकालिका सहस्त्रनामस्तोत्रस्य महाकालभैरव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्मशानकाली देवता धर्मार्थकाममोक्षाय विनियोगः।

श्री दक्षिण कालिका के इस सहस्रनामस्तोत्र के ऋषि महाकाल भैरव छन्द त्रिष्टुप् और देवता श्मशानकाली हैं। इसका विनियोग, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के लिए होता है। यहां से सहस्र नाम स्तोत्र आरम्भ होता है।

श्मशानकालिका काली भद्रकाली कपालिनी।
गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्ला विरोधिनी॥
कालिका कालरात्रिश्च महाकालनितम्बिनी।
कालभैरवभार्या च कुलवर्मप्रकाशिनी॥
कामदा कामिनी कन्या कमनीयस्वरुपिणी।
कस्तूरीरसलिप्तांगी कुञ्जरेश्वरगामिनी॥

ककारवर्णसर्वांगी कामिनी कामसुन्दरी।
कामार्त्ता कामरुपा च कामधेनु कलावती॥
कांता कामस्वरुपा च कामाख्याकुलकामिनी।
कुलीना कुलवस्हम्बा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी॥

कौमारी कुलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशोदरी।
कृशांगी कुलिशांगी च क्रीं कारी कमला कला॥
करालस्या कराली च कुलकान्तापराजिता।
उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता बिप्रचिता महाबला॥
नीला घना मेघनाद्रा मात्र मुद्रा मितामिता।
ब्रह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला॥

माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका ।
वज्रांगी वज्रीं कंकाल नृमुण्डस्त्रग्विणी शिवा ॥
मालिनी नरमुण्डालीगलद्रक्तविभूषणा ।
रक्तचन्दनसिक्तांगी सिन्दूरारुणमस्तका ॥

घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोरा घोरतरा शुभा ।
महादंष्ट्रा महामाया सुन्दरी युगदन्तुरा ॥
सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना ।
शारदेन्दुप्रसन्नस्या स्फुरत्स्मेताम्बुजेक्षणा ॥

अट्टहसा प्रफुल्लास्या स्मेरवक्त्रा सभाषिणी ।
प्रफुल्लपद्मवदना स्मितास्या प्रियभाषिणी ॥
कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहुभाषिणी ।
सुमतिः कुमतिश्चण्डा चण्डामुण्डातिवेगिनी ॥

प्रचंडा चंडिका चंडी चर्चिता चण्डवेगिनी ।
सुकेशी मुक्तकेशी च दीर्घकेशी महाकचा ॥
प्रेतदेही कर्णपूरा प्रेतपाणिसुमेखला ।
प्रेतासना प्रियप्रेता प्रेतभूमिकृतालया ॥

श्मशानवासिनी पुण्या पुण्यदा कुलपंडिता ।
पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोका च पावनी ॥
पूता पवित्रा परमा परा पुण्यविभूषणा ।
पुण्यनाम्नी भीतिहरा वरदा खंगपाशिनी ॥

नृमुण्डहस्ता शान्ताच छिन्नमस्ता सुनासिका।
दक्षिणा श्यामली शांता पीनोन्नतस्तनी॥
दिगम्बरी घोरराबा श्रृक्कांतरक्तवाहिनी।
घोररावा शिवासंगा निःसंगा मदनातुरा॥
मत्ता प्रमत्ताः मदना सुधासिन्धुनिवासिनी।
अतिमत्ता महामत्ता सर्वाकर्षणकारिणा॥
गीतप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्यपरायणा।
चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा॥

कात्यायनी जगन्माता जगती परमेश्वरी।
जगद्बंधुर्जगद्धात्री जगदानन्दकारिणी॥
जगज्जीवव्रतो हेमवती माया महालया।
नागयज्ञोपवीतांगी नागिनी नागशायिनी॥
नागकन्या देवकन्या गांधारी किन्नरी सुरी।
मोहरात्री महारात्रि दारुणाभा सुरासुरी॥

विद्याधरी वसुमती यक्षिणी योगिनी जरा।
राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा॥
श्रुतिस्मृतिमहाविद्या गुह्यविद्या पुरातनी।
चिंताचिंतास्वधा स्वाहा निद्रा तँद्रा व पार्वती
अपर्णा निश्चला लीला सर्वविद्या तपस्विनी।
गंगा काशी शती सीता सती सत्यपरायणा॥

नीतिः सुनोति सुरु स्तुष्टिः पुष्टिर्धृ वि क्षमा।
वाणो बुद्धिर्महालक्ष्मी लक्ष्मीनीलसरस्वती ॥

सरस्वतो स्तोत्रवती मातंगी विजया जया।
नदी सिन्धु सर्वमयी तारा शून्यनिवाहिनी ॥

शुद्धा तरँगिनो मेघा डाकिनी बहुरूपिणी।
सदानन्दमयी सत्या सर्वानन्दस्वरूपिणी ॥

सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीय स्वभाविनी।
रंकिणी टंकिणी चित्रा विचित्रा चित्र रुपिणी ॥

पद्मा पद्ममालया पद्ममुखो पद्मविभूषणा।
शाकिनी डाकिनी क्षान्ता राकिणी रुधिरप्रिया ॥

भ्रान्तर्भवानी रुद्राणी मृडानी शत्रुमर्दिनी।
उपेन्द्राणी महेशानी ज्योत्सना चेन्द्रस्वरुपिणि।

सूर्य्यात्मिका रुद्राणी रौद्रो स्त्री प्रतिकृपुमान् ॥
शक्तिः सूक्तिर्मतिमती भुक्तिर्मुक्ति पतिव्रता।

सर्वेश्वरी सर्वमाता सर्वाणी हरवल्लभा ॥
सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्ध भाव्य च भनापहा ॥

कर्त्री हत्री पालयत्रो शर्वरी तामसी दयी।
तमिस्त्र यामिनीस्था च स्थिरा घोरा तपस्विनी ॥

चार्वंगी चंचला लोलजिह्वा चारुचरित्रिणी।
बरात्रवरी लज्जा निलज्जा हि रजोवती ॥

सत्यवती धर्मनिष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुरवादिनी।
गरिष्टा दुष्टसंहत्री विशिष्टा श्रेयसी घृणा॥

भीमा भयानका भीमवादिनी भी प्रभावती।
वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकर्त्री यजुप्रिया॥

ऋक्सामाथर्वनलया रागिनी शोभनस्वरा।
कलकंठी कम्बुकँठी सेतुर्वीणापरायण॥

वंशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रिजगदीश्वरी।
मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धि सिद्धि शुचिस्मिता॥

रम्भोर्वशी रता रामा रोहिणी रेवती रमा।
शंखिनी चक्रिणी कृष्णा गर्दिनी पद्मिनी तथा॥

शूलिनी परिघोरा च पाशिनी शारंगपाणिनी।
पिनाकधारिणी धूम्रा शरभी वनमालिनी॥

वज्रिणी समरप्रीता च वेगिनी रणपण्डिता।
जटिनदू बिम्बनी नीला लावण्यम्बुधिचन्द्रिका॥

बलिप्रिया सदा पूज्या पूर्णादत्येन्द्रमाथिनी।
महिषासुरसंहन्त्री वासिनी रक्तदन्तिका॥

रक्तरा रुथिरक्तांगी रक्तखपरहस्तिनी।
रक्तप्रिया माँसरुधिराशवासरक्तमानसा॥

गलच्छोणित मुण्डालाकण्ठमाला विभूषिणा।
शवासना चितान्तस्था माहेशी वृषवाहिनी॥

व्याघ्रत्वगम्बरा चीनचेलनी सिंहवाहिनी ।
वामदेवी महादेवी गौरी सर्वज्ञभामिनी ॥

बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा ।
शुभ्रविलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी मही ॥

स्वप्नावती चित्रलेखा लोपामुद्रा सुरेश्वरी ।
अमोघाऽरुन्धती तीक्ष्ण भोगवत्यनुवादिनी ॥

मंदाकिनी मंदहासा ज्वालामुख्यसुरान्तका ।
मानदा मानिनी मान्या माननीया मदोद्धता ॥

मदिरा मदिरामादा मेध्या नव्या प्रसादिनी ॥
सुमध्यानन्तगुणिनी सर्वलोकोत्तमोत्तमा ।

जयदा जित्वरा जेत्रीजयश्रीर्जयशालिनी ॥
सुखदा शुभदा सत्या सभा संक्षोभकारिणी ॥

शिवमूर्ति भूतिमयी विभूतिभीषणानना ।
कौमारी कुब्जा कुन्ती कुलस्त्री कुलपालिका ॥

कीर्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्या भूतपतिप्रिया ।
सगुणा निर्गुणा धृष्टा निष्ठाकाष्ठा प्रतिष्ठिता ॥

धनिष्ठा धनदा धन्या वसुधा स्वप्रकाशिणी ।
उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा सगुणा त्रिगुणात्मिका ॥

महाकुलीना निष्कामा सकामा कमजीवना ।
कामदेवकला रामाभिरामा शिवनर्तकी ॥

चिंतामणिकल्पलता जाग्रती दीनवत्सला ।
कार्तिका कृत्या अयोध्या विषछासमा ॥

सुमन्त्रा मन्त्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी ।
त्रैलोक्यजननी हृष्टा निर्माता मनोरूपिणी ॥

तडागनिम्नजठरा शुष्कमांसास्थिमालिनी ।
अवन्ती मथुरा माया त्रैलोक्यपावनीश्वरी ॥

व्यक्ताव्यानेकमूर्ति ईश्वरी भीमनादिनी ।
क्षेमकरी शंकरी च सर्वसम्मोहकारिणी ॥

अर्द्धतेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा ।
अद्वैता भागिनी पूज्या युवीत सर्वमंगला ॥

सर्वप्रियंकरी भोग्या धरणी पिशिताशना ।
भयंकरा पापहरा निष्कलंका वशंकरी ॥

आशा तृष्णा चन्द्रकला निद्रान्या वायुवेगिनी ।
सह स्रसूर्यसंकाशा चंद्रकोटिसमप्रभा ॥

वन्हिमंडलसंस्था च सर्वतत्वप्रतिष्ठिता ।
सर्वाचारवती सर्वदेव कान्ताधिदेवता ॥

दक्षकन्या दक्षयज्ञनाशिनी दुर्गतारिका ।
इज्या पूज्या विभीर्मूर्तिः सत्कीर्तिर्वह्मरूपिणी ॥

रम्भोरुश्चतुरा राका जयन्ती करुणा सयी ।
मनस्विनी देवमाता यशस्या ब्रह्मचारिणी ॥

ऋद्धिदा वृद्धिदा वृद्धिः सर्वाद्या सर्वदायिनी ।
आधाररूपिणी ध्येया मूलाधार निवासिनी ।
अज्ञा प्रज्ञापूर्णमनाश्चन्द्रमुख्यनुकूलिनी ।
वावदूका निम्ननाभिः सत्या संध्या दृढ़व्रता ।।
आन्वीक्षिकी दण्डनीति स्त्रयी त्रिदिवसुन्दरी ।
ज्वलिनी ज्वालिनी शैलतनया विन्ध्यवसिनी ।
अमेया खेचरी धैर्या तुरीया विमलातुरा ।
प्रगल्भा वारूणीच्छाया शशिनो विस्फुलिंगिनीं ।
मुक्तिः सिद्धिः सदा प्राप्ति प्राकाम्या महिमाणिमा ।
इच्छासिद्धिर्विसिद्धा च वशित्वोर्ध्वनिवासिनी ।
लघिमा चैव गायत्री सावित्री भुवनेश्वरी ।।
मनोहरा चिता दिव्या देव्युदारा मनोरमा ।
पिंगला कपिला जिह्वा रसज्ञा रसिका रसा ।
सुषुम्नेडा भोगवती गान्धारी नरकान्तथा ।
पाँचाली रूक्मिणी राधाराध्या भीमाधिराधिका ।
अमृता तुलसी घृन्दा कैटभी कपटेश्वरी ।
उग्रचण्डेश्वरी वीरा जननी वीर सुन्दरी ।
उग्रतारा यशोदाख्या देवकी देवमानिता ।।
निरञ्जना चित्रदेवी क्रोधिनी कुलदीपिका ।
कुलवागीश्वरी वाणी मातृका द्राविणी द्रवा ।
योगेश्वरी महामारी भ्रामरी विन्दुरूपिणी ।

दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला चमरीप्रभा ।
कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशुण्डो प्रकटा तिथी ।
द्रविणी गोपिनी माया कामबोजेश्वरी क्रिया ॥
शाम्भवी केकरा मेना मूषलास्त्रा तिलोत्तमा ।
अमेया बिक्रमा क्रूशा सम्पत् शाला त्रिलोचना ।
सुस्थी हव्य वहा प्रीतिरुष्मा धूमार्चिरंगदा ।
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणी धरा ।

त्रिखण्डा बोधिनी वश्या सकला शब्दरूपिणी ॥
बीजरूपा महामुद्रा योगिनी योनिरूपिणी ।
अनंग कुसुमानंगमेखलानंगरूपिणी ॥
व्रजेश्वरी च जयिनी सर्वद्वन्दक्षयंकरी ।
षडंगयुवती योगयुक्ता ज्वालाँशुमालिनी ॥
दुराशया दुरावारा दुर्जया दुर्गरूपिणी ।
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा ।
हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकम्भर्यनुकम्पिनी ॥
त्रिकोणनिलया नित्या परमामृतरंजिता ।
महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुलसुन्दरी ।
त्वरिता भक्तिसंसक्ता भक्तवश्या सनातनी ॥
भक्तानन्दमयी भक्तभाविका भक्तशंकरी ।
सर्वसौन्दर्यनिलया सर्वसौभाग्यशालिनी ॥

सर्वं संभोगभवना सर्वं सौख्यनिरूपिणी ।
कुमारीपूजनरता कुमारीव्रतचारिणी ॥
कुमारीभक्तिसुखिनी कुमारीरूपधारिणी ।
कुमारीपूजकप्रीता कुमारीप्रीतिदा प्रिया ॥
कुमारीसेवकासंगा कुमारीसेवकालया ।
आनन्दभैरवी बाला भैरवी बटुकभैरवी ॥
श्मशानभैरवी कालभैरवी पुरभैरवी ।
महाभैरव पत्नी च परमानन्दभैरवी ॥
सुधानन्दभैरवी च उन्मादानन्दभैरवी ।
मुक्तानन्दभैरवी च तथा तरुणभैरवी ॥
ज्ञानानन्दभैरवी च अमृतानन्दभैरवी ।
महाभयँकरी तीव्रा तीव्र वेगा तपस्विनी ॥
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी ।
त्रिपुरेशी पञ्चदशी पंचमी पुरवासिनी ॥
महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी ।
महांकुशस्वरूपा च महाचक्रेश्वरी तथा ॥
नवचक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी ।
राजराजेश्वरी घोरा महात्रिपुरसुन्दरी ॥
सिन्दूरपुररुचिरा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।
सर्वांगसुन्दरी रक्ता रक्तवस्त्रोत्तरीयिणी ॥
जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दनधारिणी ।

जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दनरूपधृक् ।
चामरी बालकुटिलनिर्मलश्यामकेशिनी ॥
वज्रमौक्तिकरत्नाढ्य-किरीट मुकुटोज्वला ।
रक्तकुण्डल-संसक्तस्फुरद्गण्ड–मनोरमा ॥
कुंजरेश्वरकुम्भोत्थ मुक्तारंजित-नासिका ।
मुक्ताविद्रुम–माणिक्यहाराढ्यस्तनमण्डला ॥
सूर्यकान्तेन्दु कान्ताढ्यस्पर्शाश्म कंठभूषणा ।
बीजदपूरस्फरद्बीज दन्तपंक्तिरनुत्तमा ॥
कामकोदण्डकाभुग्नभ्रूकटाक्ष प्रवर्षिणी ।
मातंगकुम्भवक्षोजा लसत्कोकनदेक्षणा ॥
मनोज्ञशष्कुलीकर्णा हंसीगति विडम्बिनी ।
पद्मरागांगद ज्योतिर्दोश्चतुष्कप्रकाशिनी ॥
नानामणि परिस्फूर्जच्छुद्धकांचन-कंकना ।
नागेन्द्रदन्तनिर्माण वलयांकित पाणिनी ॥
अंगुरीयकचित्रांगी विचित्रक्षुद्रघन्टिका ।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमंजीररंजिनी ॥
कर्पूरागरुकस्तूरी कुंकुमद्रव लेपिता ।
विचित्ररत्नपृथिवीकल्प शाखितलस्थिता ॥
रत्नद्वीप स्फुरद्रक्तसिंहासन विलासिनी ।
षट्चक्रभेदनकरी परमानन्दरूपिणी ॥
सहस्रदलपद्मान्तश्चन्द्रमन्डलवर्तिनी ।

ब्रह्मरूपशिवा क्रोडानानासुख विलासिनी ।
हरविष्णु विरिंचीन्द्रग्रहनायकसेविता ॥
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिववादिनी ।
मातगिंनी श्रीमती च तथैवानन्दमेखला ॥
डाकिनी योगिनी चैव तथोपयोगिनी मता ।
माहेश्वरो वैष्णवी च भ्रामरी शिवरूपिणी ॥
अलम्बुषा वेगवती क्रोधरूपा सुमेखला ।
गान्धारी हस्तजिह्वा च इडा चैव शुभंकरी ॥
पिंगला ब्रह्मदूती च सुषुम्ना चैव गन्धिनी ।
आत्मयोतिर्ब्रह्मयोनिर्जगद्योनिरयोनिजा ॥
भगरूपा भगस्थात्री भगिनी भगरूपिणी ।
भगात्मिका भगाधाररूपिणी भगमालिनी ॥
लिंगाख्या चैव लिंगेशी त्रिपुराभैरवी तथा ।
लिंगगीतिः सुगीतिश्च लिंगस्था लिंगरूपधृक् ॥
लिंगमाना लिंगभवा लिंगलिंगा च पार्वती ।
भगवती कौशिकी च प्रेया चैव प्रियंवदा ॥
गृध्ररुपा शिवारुपा चक्रिणी चक्ररूपधृक् ।
लिंगाभिधायनी लिंगप्रियालिंग निवासिनी ॥
लिंगस्था लिंगनी लिंगरुपिणी लिंगसुन्दरी ।
लिंगगीतिर्महाप्रीता भगगीतिर्महासुखा ।

लिंगनामसदानन्दा भगनामसदागतिः ।
लिंगमालाकंठभूषा भगमालाविभूषणा ॥
भगलिंगस्य मृत प्रीता भगलिंगस्वरूपिणी ।
भगलिंगस्य रूपा च भगलिंगसुखावहा ॥
स्वयम्भूकुसुमप्रीता स्वम्भूकुसुमार्चिता ।
,, कूसुमप्राण। ,, पुष्पर्पिता ।
,, पुष्पघष्टिता ,, पुष्पधारिणी ॥
,, पुष्पतिलका ,, पुष्पचर्चिता ।
,, पुष्पतिलका ,, पुष्पचर्चिता ॥
,, पुष्पनिरता ,, कुसुमग्रहा ॥
,, पुष्पयज्ञाँशा ,, कुसुमात्तिका ।
,, पुष्पनिचित्ता ,, कुसुमप्रिया ।
,, कुसुमादान लालसोन्मत्तमाभसा ॥
,, कुसुमा नन्दलहरी स्निग्धदेहिनी ।
,, कुसुमाधारा स्वयम्भूकुसुमाकला ॥
,, पुष्पनिलया ,, पुष्पवासिनी ।
,, कुसुमस्निग्धा ,, कुसुमात्मिका ॥
स्वयम्भूपुष्पकारिणी स्वयभूपुष्पपाणिका ।
,, कुसुमध्याना ,, कुसुमप्रभा ॥

„ कुसुमज्ञाना „ पुष्पभागिनी ।
„ कुसुमोल्लासा „ पुष्पवर्षिणी ।
„ कुसुमोत्साहा „ पुष्परुपिनी ।
„ कुसुमोन्मादा „ पुष्पसुन्दरी ।
„ कुसुमाराध्या „ कुसुमोद्भवा ।
„ कुसुमव्याग्रा „ पुष्पपूजिता ।
„ पूजकप्रज्ञा „ होतृमातृका ।
„ दातृरक्षित्री „ रक्ततारिका ।
„ पूजकप्रस्ता „ पूजकप्रिया ।
„ बन्दकाधारा „ निन्दकान्तका ।
„ प्रदसर्वस्वा „ प्रदपुत्रिणी ।
„ प्रदसस्मेरा „ प्रदशरीरिणी ।
सर्वकालोद्भवप्रीता सर्वकालोद्भवात्मिका ।
सर्वकालोद्भवोद्भावा सर्वकालोद्भवात्मिका ॥
कुण्डपुष्पसदाप्रीति गोलिपुष्पसदारतिः ।
कुण्डगोलादुभवप्राणा कुण्डगोद्भवात्मिका ॥
स्वयम्भू वा शिवा धात्री पावनी लोकपावनी ।
कीर्तियशस्विनी मेधा विमेधा शुक्रसुन्दरी ॥
अश्विनी कृत्तिका पुष्या तेजस्का चंद्रमण्डला ।
सूक्ष्मासूक्ष्मा बलाका च वरदा भयनाशिनी ॥

वरदाभयदा चैव मुक्तिबन्ध विनाशिनी।
कामुका कामदा कान्ता कामाख्या कुलसुन्दरी॥
दुःखदा सुखदा मोक्षा मोक्षदार्थप्रकाशिनी।
दुष्टादुष्टमतिश्चैव सर्वकार्यविनाशिनी॥
शुक्राधारा शुक्ररूपा शुक्रसिन्धुनिवासिनी।
शुक्राल्या शुक्रभोगा शुक्रपूजासदारतिः॥
शुक्रपूज्याः शुक्रहोमसन्तुष्टा शुक्रवत्सला।
शुक्रस्था शुक्रदेहा शुक्रपूजकपुत्रिणी॥
शुक्रन्ति शुक्रिणी शुक्रसंस्पृहा शुक्रसुन्दरी।
शुक्रस्नाता शुभकरी शुक्रसेव्यातिशुक्रिणी॥
महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रवृष्टि विधायिनी।
शुक्राभिधेया शुक्रार्हा शुक्रवन्दक वन्दिता॥
शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्दाभिधायिका।
शुक्रोत्सवा सदाशुक्रपूर्णाशुक्रमनोरमा॥
शुक्रपूजकसर्वस्वा शुक्र निन्दकनाशिनी।
शुक्रात्मिका शुक्रसम्वत् शुक्राकर्षकारिणी॥
शारदा साधकप्राणा साधकाभक्तमानसा।
साधकोत्तमसर्वस्वा साधकाभक्तरक्तपा॥
साधकानन्दसंतोषा साधकानन्दकारिणी॥
आत्मविद्या ब्रह्मविद्या परब्रह्मस्वरूपिणी।

त्रिकूटस्था पंचकूटा सर्वकूटशरीरिणी।
सर्ववर्णमयी वर्णजपमालाविधायिनी॥
इति श्रीकालिकानामसहस्रं शिवभाषितम्।
गुह्याद्‌गुह्यतरं साक्षात् महापातकनाशनम्॥
पूजाकाले निशीथे च सन्ध्ययोरुभयोरपि।
लभते गाणापत्यं स यः पठेत् साधकोत्तमः॥
यःपठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेद्वत्तथा।
सर्वपापविनिर्मुक्तः स याति कालिकापुरम्॥
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि यः कश्चिन्मानवः स्मरेत्।
दुर्गं दुर्गशतं तीर्त्वा स याति परमां गतिम्॥
वंध्या वा काकवंध्या वा मृतवत्सा च यांगना।
श्रुत्वास्तोत्रमिदं पुत्रान् लभते चिरजीविनः॥
यं यं कामयते कामं पठेन् स्तोत्रमनुत्तमम्।
देवीपादप्रसादेन तत्तदाप्नोति निश्चितम्॥

॥ समाप्त ॥

श्री कालिका हृदय स्तोत्रम्

विनियोग

ॐ अस्य श्री दक्षिणकालिका हृदय स्तोत्र महामन्त्रस्य महाकालभैरव ऋषिः उष्णिक् छन्दः ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्रीं कीलकं महाघोढ़ा स्वरूपिणो महाकाल महिषा दक्षिण कालिका देवता असादात् धर्मार्थ काममोक्षर्थे पाठें विनियोगः।

षडंगन्यास

ॐ क्रां ॐ क्रीं ॐ क्रूँ ॐ क्रै ॐ क्रौं क्रः—इत्यनेन कर षडंगः।

ध्यानम्

शुष्कमां कोटराक्षीं प्रलय घनघटां घोर रुपां प्रचण्डां।
दिग्वस्त्रां पिङ्गकेशीं डमरुमथश्रेणीं खड्गपाशान् भपाणिं॥
नागंघटां कपालं करसरसि रुहाँ है कालिकां कृष्णवर्णाम्।
ध्यायामि ध्येयमातां सकल सुखकरीं कालिकां तां नमामि।

हृदयम्

ॐ क्रीं क्रीं क्रूं हुं हुं हुं ह्रीं ह्रीं ॐ ॐ ॐ ॐ हंसः सोहं ॐ हंसः ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्रों हूं ह्रों स्वाहास्वरूपिणी। अं आं रूपयोग्रेण योगसूत्रग्रंन्थि भेदय ईं ईं रुद्र ग्रंन्थ भेदय भेदय उं ऊं विष्णु ग्रंन्थि भेदय भेदय ॐ अं क्रीं आं क्री ईं क्रों ईं क्रों उं हूं ऊं हूं ऋं ह्रीं ऋं ह्रीं लृं द लॄ क्षि एं णं ऐं कालि औंके औं क्रीं ॐ अं क्रीं क्रीं अः हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा महाभैरवी हूं हूं महाकालरूपिणी ह्रीं ह्रीं प्रसीद-प्रसोद रूपिणी ह्रीं ह्रीं ठः ठः क्रीं अनिरूद्धा सरस्वती हूं हूं ब्रह्मविष्णु ग्रहबन्धनी रुद्रग्रहन्बधनी गोत्रदेवता ग्रह बन्धनी आधि व्याधि ग्रहबंधनी सन्निपात ग्रहबन्धनी सर्वदुष्ट ग्रहबन्धनी सर्वदानव ग्रहबन्धनी सर्वदेव ग्रहबन्धनी सर्वगोत्रदेवता ग्रहबन्धनो सर्वग्रहान् नेडि नेडि विश्पट विश्पट क्रीं कालिके ह्रीं कपालिनो हूं कुल्ले ह्रीं

कुरुकुल्ले हुं विरोधिनी ह्रीं विप्रचित्ते स्फ्रें ह्रौं उग्रे उग्रप्रभे ह्रौं उ दीप्ते ह्रीं घने हूं त्विषे ह्रीं नीले च्लूं चलूं नीलपताके ॐ ह्रीं घने घनाशने ह्रीं वलाके ह्रीं ह्रीं ह्रीं मिते ओसिते असित कुसुमोपमे हूं हूं हूंकारि हां हां हांकारि काँ कां काकिनि रां रां राकिनि लां लां लाकिनि हाँ हां हाकिनि क्षिस् क्षिस् भ्रम भ्रम उत्त उत्त तत्त्वविग्रहे अरूपे अमले विमले अजिते अपराजिते क्रीं स्त्रीम् स्त्रीम् हूं हूं फ्रें फ्रें दुष्टविद्राविणी आं ब्राह्मी ईं माहेश्वरीॐ कौमारी ऋँ वैष्णवी लृं वाराही ऐं इन्द्राणी ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै औं महालक्ष्यै अः हूं हूं पंचप्रेतोपरिसंस्थितायै शवालंकारायै चितान्तस्थायै भैं भैं भद्र-कालिके दुष्टान् दारय दारय दारिद्रं हन हन पाप मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु विरूपाक्षी विरूपाक्ष वरदायिनि अष्टभैरवीरूपे ह्रीं नवना-थात्मिके ॐ ह्रीं ह्रीं सत्ये रां रां राकिनि लां लां लाकिनि हां हां हाकिनि कां कां काकिनि क्षिस् क्षिस् वद् वद् उत्त उत्त तत्त्वविग्रहे अरूपे स्वरूपे आद्यमाये महाकालमहिषि ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ॐ ॐ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हुं हूं ह्रीं ह्रीं महामाये दक्षिण कालिके ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं मां रक्ष-रक्ष मम पुत्रान् रक्ष रक्ष मम स्त्रीं रक्ष रक्ष ममोपरि दुष्टबुद्धि दुष्ट प्रयोगान् कुर्वन्ति कारयन्ति करिष्यन्ति तान् हन हन मम मन्त्रसिद्धिं कुरु कुरु दुष्टान् दारय दारय दारिद्रं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु आत्मतत्त्वं देहि देहि हंसः सोहं ॐ क्रीं क्रीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ हमकोटि स्वरूपे आद्ये आद्य-विद्ये अनिरुद्धा सरस्वति स्वात्मचैतन्यं देहि देहि मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ मम मनोरथं कुरु कुरु स्वाहा ।

इदन्तु हृदयं दिव्यं महापापौघनाशनम् ।
सर्वदुःखोपमनं सर्वव्याधि विनाशनम् ॥

सर्वशत्रु क्षयंकरं सर्वसंकट मोचनम् ।
ब्रह्महत्यासुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गमनागम् ॥

सर्वशत्रुहरंत्वेव हृदयस्य प्रसादतः ।
भौमवारे च संक्रान्तौ अष्टम्यां जन्ववासरे ॥

चतुर्दश्यां षष्ठ्यां च शनिवारे च साधकः ।
हृदयानेन संकीर्त्य किं न साधयते नरः ॥

अप्रकाश्यमिदं देवि हृदयं देव दुर्लभम् ।
सत्य सत्यं पुनः सत्यं यदिच्छेच्छुभवात्मनः ॥
प्रकाशयति देवेशि हृदयं मन्त्रविग्रहम् ।
प्रकाशात् सिद्धिहानिः स्यात् शिवस्य त्निरयंव्रजेत् ॥
दारिद्रं तु चतुर्दश्यां योषितुः संगमैःसह ।
बारत्रयं पठेद्देवि प्रभाते साधकोत्तमः ।
षण्मासेन महादेवि कुबेर सदृशो भवेत् ।
विद्यार्थी प्रजपेत पौर्णिमायां सुधाकरे ॥
सुधी संवतर्ना ध्यायेद्देविमावर्णैः सह ।
शतमष्टोत्तरं मन्त्रं कविर्भवति वप्परात् ।
अर्कवारेऽर्क बिम्बस्थां ध्यायेद्देवी समाहितः ।
सहस्रं प्रजपेन्मंत्र देवतादर्शन कलौ ॥

भवत्येव महेशानि कालीमन्त्र प्रभावतः।
मकारपँचकं देवि तोषयित्वा यथाविधिः॥
सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं इदन्तु हृदयं पठेत्।
सकृदुच्चारमात्रेण पलायन्ते महापदः॥
उपपातकदौर्भाग्यशमनं भुक्ति मुक्तिदम्।
क्षयरोगाग्निकुष्ठघ्नं मृत्युसंहार कारकम्॥
सप्तकोटिमहामंत्र पारायण फल प्रदम्।
कोटयश्वमेधफलदं जरामृत्यु निवारकम्॥
किं पुनर्बहुनोक्तेन सत्यं सत्यं महेश्वरी।
मद्यमांसासवैर्देवि मत्स्यमाक्षिकपायसैः॥
शिवबलिः प्रकर्तव्या मिदन्तु हृदय पठेत्।
इहलोके भवेद्राजा मृतो मोक्षमवाप्नुयात्॥
शतावधानो भवति मासमात्रेण साधकः।
संवत्सर प्रयोगेन साक्षात् शिवमयो भवेत्॥
महादारिद्रं निर्मुक्तं शापानुग्रहेण क्षमः।
काशीयात्रा सहस्राणि गंगास्नान शतानि च॥
ब्रह्महत्यादिभिपापैः महापातक कोटयः।
सद्यः फलयतां याति मेरुमन्दिर सन्निभम्॥
भक्तियुक्तेन मनसा साधयेत् साधकोत्तमः।
साधकाय प्रदातव्यं भक्तियुक्ताय चेतसे॥

अन्यथा दापयेद्यस्तु स नरो शिवहा भवेत् ।
अभक्ते वंचके धूर्ते मूढ़े पण्डितमानिने ।।
न देयं यस्य कस्यापि शिवस्य वचनं यथा ।
इदं सदा शिवेनोक्तं साक्षात्कारं महेश्वरि ।।
परमं पदमासाद्य खेचरोजायते नरः ।
।। इति श्री देव्यामले श्री कालिकाहृदयसूत्रम् समाप्तम् ।।

सिद्ध काली चालीसा

जय गणेश जय शारदे, जय महेश जय उमेश ।
जय समीर सुत जय सदा, स्वतन्त्र भारत देश ।।
परम भक्त बजरङ्ग के मां काली के भक्त ।
मां तारा के भजन से भयउं सिद्ध कवि 'मत्त' ।।
जय जय सीता राम के, मध्य वासिनी अम्ब ।
देहु दर्श जगदम्ब अब, करो ना मातु बिलम्ब ।।
जय तारा जय कालिके, जय दश विद्या वृन्द ।
काली चालीसा रचत, एक 'सिद्धकवि' हिन्द ।।
प्रातःकाल उठ जो पढ़े दुपहरिया यो शाम ।।
दुःख दरिद्रता दूर हो· सिद्ध होय सब काम ।
जय काली कंकाल मालिनी, जय मंगला महाकपालिनी ।
रक्तबीज वधकारिणि माता, सदा भक्तजन के सुखदाता ।
शिरो मालिका भूषित अंगे, जय काली लघु मध्य मतंगे ।
हृदयारविन्द सुविलासिनी, जयजगदम्ब सकल दुखनाशिनी

ह्रीं काली श्री महाकराली, क्रीं कल्याणी दक्षिण काली।
जय बलावती जय विद्यावति, तारासुन्दरी महामती॥
देहु सुबुद्धि हरहु सब संकट, होहु भक्त के आगे परगट।
जय आंकरे जय हुंकारे, महाशक्ति जय अपरम्पारे॥
कमला कलियुग दर्प बिनाशिनि, सदा भक्तजन के भय नाशिनि।
अब जगदम्ब न देर लगावहु, दुख दरिद्रता मोर हटावहु॥
जयति कराल काल की माता, कालानल समान द्युतिगाता।
जय शंकरी सुरेति सनातनि, कोटि सिद्धि छनि मातु पुरातन॥
कपर्दिनी कलि कल्मषलोचनि, जय विकसित नवनलिन बिलोचनि।
आनन्दा आनन्द निधाना, देहु मातु मोहि निर्मल ज्ञाना॥
करुणामृत सागर कृपामयी, होहु दुष्टजन पर निर्दयी।
सकल जीव तोहिं समान प्यारा, सकल विश्व तेरे आधारा॥
प्रलय काल में नर्तनकारिणी, जगजननी सब जग को पालिनि।
महोदरी माहेश्वरी माया, हिमगिर सुता विश्व की छाया॥
घुमड़त अतिप्रचण्ड घनमाही, गर्जत तुही और कोऊ नाहीं।
स्फुरित मणि गणीका प्रताने, तारागण तू व्योम बिताने॥
श्री राधा संतन हितकारिणी, अग्निपानि अति दुष्टविदारिणी।
धूम्रविलोचनि प्राण बिमोचनि, शुम्भ निशुम्भ मथनि वरलोचनि॥
सहस्रभुजी सरोरुह मालिनी, चामुण्डे मरघट के वासिनि।
खप्पर मध्य सुशोभित साजी; मारेउ मां महिषासुर पाजी॥
अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका, सब एके तुम आदि कालिका।

अजा एक रूपा बहु रूपा, अकथ चरित्रा शक्ति अनूपा।
कलकत्ते के दक्षिण द्वारे, मूरति तोर महेशि अपारे॥
कादम्बरी पामर तू श्यामा, जय मातंगी काम के धामा।
कमलासनवासिनी कमलायनि, जय श्यामा जय जय श्यामायनि॥
रासरते नवरते प्रकृति हे, जयति भक्त उर कुमति सुमति हे।
कोटि ब्रह्म शिव विष्णु कर्मदा, जयति अहिंसा धर्म जन्मदा॥
जलथल नभमण्डल में व्यापिनी, सौदामिनी मध्य अलापिनी।
झननन तच्छमरिन, रिननादिनी, जय सरस्वती बीणावादिनी॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै, कलित गले कोमल रुण्डायै।
जय चामुण्डा सिद्धकवि माता, कामाख्या और काली माता॥
हिंगलाज विन्ध्याचल वासिनी, अघहासिनी अघनासिनी।
कितनी स्तुति करो अखण्डे, तू ब्रह्माण्ड शक्ति जितखण्डे॥
यह चालीसा जो नर गावै, मातु भक्त वाँछित फल पावे।
केला और फल फूल चढ़ावे, मांस खून से नाहिं छुआवे॥
सबके तुम समान महतारी, काहे कोई बकरा को मारी॥

दोहा—सब जीवों के जीव में, व्यापक तूही अम्ब।
कहत सिद्ध कवि सब जगत, तोरे सुत जगदम्ब॥
छमहु सकल अपराध मम; काटहु यम के फन्द।
दुःख दारिद्रन मारहु, हरहु कष्ट दुःख द्वन्द॥
प्रति दिन चालीसा पढ़े, धूप दीप के संग।
विघ्न न एकहु आवहीं, सदा रहे निःशंक॥

❀ समाप्त ❀

मूल्य ५=००